

आधुनिक जीवन में भारतीय परंपरा की नई भूमिका



ज्योतिषाचार्य
आचार्य पं. प्रमोद पाण्डेय

इक्कीसवीं सदी में मनुष्य के पास सुविधाएँ और सूचनाएँ पहले की तुलना में कहीं अधिक हैं, लेकिन इसके साथ जीवन की गति भी तेज हुई है। काम का दबाव, लगातार बढ़ती प्रतिस्पर्धा, डिजिटल माध्यमों का बढ़ता इस्तेमाल और व्यक्तिगत संबंधों में बदलाव ने मनुष्य के सामने एक अलग तरह की चुनौती खड़ी की है। ऐसे समय में मानसिक शांति, आत्म-जागरूकता और भावनात्मक संतुलन की चर्चा फिर से केंद्र में आई है। इसी संदर्भ में भारतीय परंपरा में सदियों से चली आ रही ध्यान और आत्मनिरीक्षण की प्रक्रियाओं को समझने की स्थिति में आता है। योगसूत्र में पतंजलि ने योग को चित्त की वृत्तियों के निरोध से जोड़ा। इसका मूल उद्देश्य केवल शारीरिक अभ्यास नहीं था, बल्कि मन की गतिविधियों को समझना और उन्हें संतुलित करना था। आधुनिक मनोविज्ञान भी आत्म-जागरूकता को व्यक्ति के विकास से जोड़ा जाता है। व्यक्ति जब अपनी भावनाओं, विचारों और व्यवहार के कारणों को पहचानना शुरू करता है, तब वह अपनी प्रतिक्रिया कई बार तत्काल होती है। आत्मनिरीक्षण व्यक्ति को प्रतिक्रिया देने से पहले अपने भीतर चल रही प्रक्रिया को देखने का अवसर देता है। यही ध्यान की भूमिका सामने आती है। ध्यान का अर्थ केवल आँखें बंद करके बैठना नहीं है।

यह अपने विचारों और भावनाओं को बिना तुरंत प्रतिक्रिया दिए देखने की प्रक्रिया भी हो सकती है।

व्यक्ति अपने मन में आने वाले विचारों को पहचानता है और धीरे-धीरे यह समझने लगता है कि हर विचार पर तुरंत प्रतिक्रिया देना आवश्यक नहीं है। भारतीय परंपरा में आत्मनिरीक्षण को जीवन की समझ से जोड़ा गया है। उपनिषदों में बार-बार मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप को जानने की ओर प्रेरित किया गया। 'मैं कौन हूँ?' का प्रश्न केवल दार्शनिक प्रश्न नहीं है। यह व्यक्ति को अपने विचारों, इच्छाओं और पहचान के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है। भगवद्गीता में भी मानसिक संतुलन को जीवन के कर्म से अलग नहीं किया गया। अर्जुन युद्धभूमि में मानसिक द्वंद्व की स्थिति में है। श्रीकृष्ण उसके सामने केवल बाहरी समस्या का समाधान नहीं रखते, बल्कि उसके दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास करते हैं। कर्म, कर्तव्य, इच्छा, मोह और परिणाम के बीच संबंध को समझाते हुए वे उसे अपने निर्णय के प्रति सजग होने की दिशा देते हैं।

आधुनिक जीवन में यह प्रश्न अलग रूप में दिखाई देता है। नौकरी, पढ़ाई, रिश्ते और भविष्य को लेकर व्यक्ति लगातार निर्णय लेता है। कई बार समस्या विकल्पों की कमी नहीं, बल्कि मन की अस्थिरता होती है। व्यक्ति के पास जानकारी बहुत होती है, लेकिन अपने लिए सही निर्णय को लेकर स्पष्टता कम हो सकती है। आत्म-जागरूकता इस स्थिति में व्यक्ति को अपने मूल्यों और प्राथमिकताओं को समझने में सहायता कर सकती है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति केवल इसलिए किसी करियर को चुन सकता है क्योंकि समाज उसे सफल मानता है। लेकिन आत्मनिरीक्षण के दौरान वह यह प्रश्न पूछ सकता है कि



कारणों पर विचार किया जा सकता है। इससे व्यक्ति अपने व्यवहार और भावनाओं के बीच संबंध को बेहतर ढंग से समझ सकता है।

हालाँकि ध्यान को हर मानसिक समस्या का इलाज मानना उचित नहीं होगा। गंभीर मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में विशेषज्ञ की सहायता आवश्यक हो सकती है। ध्यान और आत्मनिरीक्षण को एक सहायक अभ्यास के रूप में देखा जा सकता है, किसी चिकित्सकीय उपचार के विकल्प के रूप में नहीं। भारतीय योग परंपरा में शरीर और मन को अलग-अलग देखने के बजाय उनके संबंध पर विचार किया गया है। आसन शरीर को स्थिर करने का माध्यम है, प्राणायाम श्वास पर ध्यान केंद्रित करता है और ध्यान मन की गतिविधियों को देखने की दिशा में ले जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में अनुशासन की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

आज डिजिटल माध्यमों ने ध्यान की दिशा में एक नई चुनौती पैदा की है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और लगातार आने वाले संदेश व्यक्ति का ध्यान बार-बार एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि की ओर ले जाते हैं। कुछ मिनट भी बिना किसी स्क्रीन के रहना कई लोगों के लिए असहज अनुभव हो सकता है। ऐसे वातावरण में अपने ध्यान का एक स्थान पर बनाए रखना स्वयं एक अभ्यास बन जाता है। आत्म-

भारतीय ज्ञान-परंपरा का आधुनिक संदर्भ में पुनर्पाठ इसी दिशा में किया जा सकता है। ध्यान को केवल धार्मिक अभ्यास, योग को केवल शारीरिक व्यायाम और आत्मचिंतन को केवल दार्शनिक विचार तक सीमित करने के बजाय इनके मानवीय और मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन किया जा सकता है। आत्म-जागरूकता का प्रश्न वही पुराना है, जो भारतीय दर्शन ने हजारों वर्षों पहले उठाया था—मनुष्य स्वयं को कितना जानता है? आधुनिक दुनिया ने इस प्रश्न के सामने नई परिस्थितियाँ जरूर खड़ी की हैं, लेकिन प्रश्न आज भी उतना ही प्रासंगिक है। शायद तकनीक और सूचनाओं से भरी दुनिया में स्वयं को समझने की यह प्रक्रिया पहले से अधिक जरूरी हो गई है।

जागरूकता का संबंध नेतृत्व से भी है। किसी संगठन या समूह का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति के लिए केवल निर्णय लेने की क्षमता पर्याप्त नहीं होती। उसे अपनी भावनाओं और सीमाओं को भी पहचानना होता है। तनाव में लिया गया निर्णय और शांत मन से लिया गया निर्णय अलग हो सकता है। इसलिए स्वयं को समझना नेतृत्व के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।

एक ऐसा नेता जो अपनी गलतियों को स्वीकार कर सकता है, आलोचना सुन सकता है और अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को समझ सकता है, वह दूसरों के साथ अधिक संतुलित संवाद कर सकता है। इस दृष्टि से आत्म-जागरूकता केवल व्यक्तिगत विकास का विषय नहीं है। इसका संबंध कार्यस्थल और सामाजिक संबंधों से भी है। भारतीय परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध भी आत्मबोध की इसी प्रक्रिया से जुड़ा दिखाई देता है। गुरु केवल जानकारी देने वाला व्यक्ति नहीं माना गया, बल्कि ऐसा मार्गदर्शक माना गया जो शिष्य को स्वयं विचार करने और सत्य को समझने की दिशा देता है। ज्ञान का उद्देश्य केवल बाहरी जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि दृष्टि का विकास भी माना गया। आज इस विचार को आधुनिक शिक्षा में अलग रूप में देखा जा सकता है।

अजा एकादशी 7 सितंबर को, जानें पूजा-व्रत का महत्व



हिंदू धर्म में एकादशी व्रत का विशेष धार्मिक महत्व माना गया है। भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अजा एकादशी इस वर्ष सोमवार, 7 सितंबर 2026 को मनाई जाएगी। यह व्रत भगवान विष्णु को समर्पित है और श्रद्धालु इस दिन उपवास रखकर भगवान विष्णु तथा माता लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अजा एकादशी का व्रत व्यक्ति को अपने पूर्व कर्मों के लिए प्रायश्चित्त करने, पापों से मुक्ति पाने और जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

अजा एकादशी के दिन सुबह स्नान कर व्रत का संकल्प लिया

धार्मिक मान्यता के अनुसार इससे आर्थिक परेशानियाँ दूर होने और समृद्धि प्राप्त होने का आशीर्वाद मिलता है। अजा एकादशी को लेकर देशभर के विष्णु मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना और धार्मिक आयोजन किए जाएंगे।

जाता है। इसके बाद भगवान विष्णु की पूजा में पीले फूल, तुलसी दल, फल और अन्य पूजन सामग्री अर्पित की जाती है। श्रद्धालु भगवान विष्णु के मंत्रों का जाप और विष्णु सहस्रनाम का पाठ भी करते हैं। मान्यता है कि इस दिन श्रद्धा और नियमपूर्वक भगवान विष्णु की आराधना करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं और परिवार में सुख-शांति बनी रहती है। इस दिन व्रत रखने वाले श्रद्धालु अन्न का सेवन नहीं करते और अपनी क्षमता के अनुसार फलाहार या केवल जल ग्रहण कर व्रत रखते हैं। एकादशी व्रत में भगवान विष्णु के साथ माता लक्ष्मी की पूजा करने की भी परंपरा है।

भगवान शिव को समर्पित प्रदोष व्रत का हिंदू धर्म में विशेष महत्व माना गया है। वर्ष 2026 में अगला प्रमुख प्रदोष व्रत 8 सितंबर, मंगलवार को रखा जाएगा। मंगलवार को पड़ने के कारण इसे भीम प्रदोष व्रत कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार प्रदोष व्रत रखने और प्रदोष काल में भगवान शिव की विधि-विधान से पूजा करने से भक्तों को सुख-समृद्धि, आरोग्य और मनोकामनाओं की पूर्ति का आशीर्वाद मिलता है।

भीम प्रदोष व्रत में भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा का विशेष महत्व है। मंगलवार होने के कारण इस व्रत में भगवान शिव के साथ मंगल ग्रह से जुड़ी मान्यताओं का भी

घर को सुख-शांति और सकारात्मक ऊर्जा से भरने के लिए लोग कई तरह के पौधे और फूल घर में लगाते हैं। भारतीय धार्मिक मान्यताओं में कमल के फूल को बेहद शुभ माना गया है। इसे पवित्रता, सौंदर्य, समृद्धि और मां लक्ष्मी से जोड़कर देखा जाता है। मान्यता है कि घर में कमल का फूल रखने या इसे पूजा में शामिल करने से सकारात्मक वातावरण बना रहता है और सुख-शांति आती है।

कमल का फूल विशेष रूप से मां लक्ष्मी की पूजा में अर्पित किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मां लक्ष्मी को कमल बेहद प्रिय है, इसलिए पूजा स्थल पर कमल



संबंध माना जाता है। श्रद्धालु इस दिन सुबह स्नान कर व्रत का संकल्प लेते हैं और दिनभर

संयम का पालन करते हुए शाम के समय प्रदोष काल में शिव पूजा करते हैं। पूजा के दौरान

सुख-शांति के लिए घर में लगाएं कमल का फूल



का फूल रखना शुभ माना जाता है। यदि घर में कमल का पौधा लगाने की जगह हो तो इसे साफ पानी वाले स्थान या छोटे जलकुंड में लगाया जा सकता है।

कमल की हासियत यह भी है कि यह कीचड़ में खिलने के बावजूद बेहद सुंदर और स्वच्छ दिखाई देता है। इसी कारण इसे जीवन में पवित्रता और सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। हालाँकि घर में पौधा लगाने से पहले उसकी धूप, पानी और जगह की जरूरत का ध्यान रखना जरूरी है। कमल से जुड़ी सुख-शांति और समृद्धि की बातें धार्मिक मान्यताओं पर आधारित हैं, इनका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

किचन के लिए आग्नेय कोण सबसे शुभ, जानें वास्तु नियम

घर बनाते समय वास्तु शास्त्र के अनुसार कमरों की दिशा और उनकी स्थिति को महत्वपूर्ण माना जाता है। इनमें रसोई यानी किचन की दिशा भी खास मानी जाती है। वास्तु मान्यताओं के अनुसार किचन के लिए दक्षिण-पूर्व दिशा यानी आग्नेय कोण को सबसे उपयुक्त माना

जाता है। इसका संबंध अग्नि तत्व से बताया जाता है, इसलिए इस दिशा में रसोई होने को शुभ माना जाता है। यदि किसी कारण से दक्षिण-पूर्व दिशा में किचन बनाना संभव न हो तो उत्तर-पश्चिम दिशा को दूसरा विकल्प माना जाता है। वहीं वास्तु के अनुसार उत्तर-पूर्व दिशा में किचन बनाने से बचने की सलाह दी जाती है। हालाँकि, वास्तु से जुड़े ये सुझाव पारंपरिक



सकारात्मक ऊर्जा, सुख-शांति और समृद्धि से जुड़ी मानी जाती है। हालाँकि घर की योजना बनाते समय हवादार व्यवस्था, धुआं बाहर निकलने की सुविधा, स्वच्छता और सुरक्षा को प्राथमिकता देना सबसे जरूरी है।

रंग-बिरंगे खिलौना बैलों संग बच्चों का तान्हा पोला

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में पोला पर्व के बाद बच्चों के लिए मनाया जाने वाला तान्हा पोला अपनी अनोखी परंपरा और रंग-बिरंगी रौनक के लिए खास पहचान रखता है। यह पारंपरिक उत्सव मुख्य पोला पर्व के अगले दिन मनाया जाता है। खासतौर पर नागपुर और आसपास के इलाकों में बच्चे इस दिन उत्साह के साथ सजाए गए लकड़ी या मिट्टी के बैलों को लेकर जुलूस निकालते हैं।

बच्चों के लिए यह त्योहार केवल मनोरंजन का अवसर नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन, खेती और बैलों के महत्व से जुड़ी परंपरा को आगे बढ़ाने का माध्यम भी है। तन्हा पोला के लिए बच्चे पहले से ही अपने खिलौना बैलों को सजाने की तैयारी करते हैं। रंग-बिरंगे कपड़ों,



कागज, मोतियों और अलग-अलग सजावटी सामग्रियों से खिलौना बैलों को आकर्षक रूप दिया जाता है। कई जगह बच्चे अपने बैलों को छोटी-छोटी गाड़ियों में सजाकर रखते हैं और फिर उन्हें लेकर उत्सव में शामिल होते हैं। गलियों और मोहल्लों में बच्चों की टोलियां जब सजे हुए खिलौना बैलों के साथ निकलती हैं तो माहौल उत्सवमय हो जाता है।

मुख्य पोला में जहां किसान अपने वास्तविक बैलों को सजाकर उनकी पूजा करते हैं, वहीं तन्हा पोला में बच्चे खिलौना बैलों के माध्यम से इस परंपरा को जीवंत रखते हैं। इस अवसर पर बच्चों में खासा उत्साह देखने को मिलता है। परिवार के बड़े भी बच्चों की तैयारियों में सहयोग करते हैं और उन्हें इस लोकपरंपरा का महत्व बताते हैं। बदलते समय के बावजूद तन्हा पोला जैसी परंपराएं महाराष्ट्र की ग्रामीण संस्कृति और लोक जीवन से नई पीढ़ी को जोड़ने का काम कर रही हैं।

राशिफल

दिनांक- 06 से 12 सितम्बर 2026 तक



साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल मिथुन राशि में, बुध सिंह राशि में ता. 7 को 12/59 दिन से कन्या राशि में, गुरु कर्क राशि में, शुक्र तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मिथुन कर्क सिंह और कन्या राशि में संचरण करेगा।

ग्रहयोगों का प्रभाव:- ता. 7 कन्यायां बुध के प्रभाव से चांदी, गेहूँ, चना, जौ, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी आयेगी। रूई में कुछ मंदी के झटके आयेंगे। भारत के उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में कहीं बादलचाल, हिमालय, कश्मीर के कुछ क्षेत्रों में हिमपात, उत्तरी भारत में शीत ऋतु का आगाज होगा।

पर्व-व्रत-त्योहार : सोमवार 07 सितम्बर को जया अजा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी, ओम द्वास, बछ बारस

मंगलवार 08 सितम्बर को प्रदोष व्रत, बुधवार 09 सितम्बर को शिवचतुर्दशी व्रत, गुरुवार 10 सितम्बर को श्राद्ध अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या, शुक्रवार 11 सितम्बर को कोपोला पिठोरा, स्नानदान अमावस्या, शनिवार 12 सितम्बर को तान्हा पोला, बाबू देोज, नारियल पुनम, अमरनाथ यात्रा,

मेघ कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आगे आपको मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यों को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि बढ़ेगी।

वृषभ यदि आप अस्वस्थ और कमजोर हैं, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अल्पाधिक खर्च और परिश्रम करना पड़ेगा।

मिथुन आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जुड़े लोग बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं, घरेलू आयोजन आनन्ददायक रहेगा, आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षाएं बढ़ेंगी, माता पिता के स्वास्थ्य

कर्क अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरुआत ठीक रहेगी, पुर्वदृष्टक गलती को सुधारकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करेंगे, सप्ताह में आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

सिंह इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीदने पर विचार होगा, अविविवाहितों को मनचढ़ाहा जीवनसाथी मिल सकता है, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले गंभीरता से विचार करना चाहिये।

कन्या इच्छित सफलता के लिये कार्य योजना में बदलाव संभव है, प्रापटी के कारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयत शिपों के कारोबार की शुरुआत कर सकते हैं, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा लेंगे, सप्ताह के शुरुआत में आप भ्रमण की स्थिति में रहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे, वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे।

तुला अपने आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानवाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा, अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है।

वृश्चिक आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। आस पड़ोस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार के विस्तार की संभावना बनती है, कार्यक्षेत्र में अच्छी सफ़लता मिलेगी, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग करेंगे।

धनु कार्य क्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा। आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, उदारता पर अंकुश रखे तो राहत मिलेगी। छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर रहेगी, शादी विवाह पर विचार होगा, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी।

मकर परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफ़लता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ़ धन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे, खानपान में सावधानी बांझनीय है।

कुम्भ आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, आपकी बुद्धि विरोधियों पर भारी पड़ सकती है, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना पड़ेगा, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं।

मीन पहिले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यों में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफ़लता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपकी विरोधियों का सामना करना पड़ेगा। जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यों में सफ़लता मिलेगी। भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापटी से अच्छा लाभ मिलेगा।